Regd. No. :.....

09450217395

Rekha Sewa Sansthan

Pure Natthan Shukla Amethi, Sultanpur (U.P.)

रेखा सेवा संस्थान

अमेठी–सुलतानपुर

Dated .....

One Day Workshop on Declining Sex Ratio

***Organized by*- Rekha Sewa Sansthan Amethi Sultanpur (U.P.)**

***Sponsored by*- National Commission for Women, New Delhi.**

FILE NO. 16 (77) 2007 - N.C.W (R&SC). 22 OCTOBER 2007

कार्यवाही की संक्षिप्त रूप रेखा

कन्या भ्रूण हत्या पर वर्कशाप आयोजित करने के लिए क्षेत्र में जागरूकता गोष्ठियों के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया गया तथा लोगों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया तथा आम राय से एक दिवसीय कार्यशाला की तिथि व स्थान तय किया गया जिसके अनुसार 30 अप्रैल 2008 को स्थान–विकास खण्ड भेटुआ, नौगिरवां सुलतानपुर में कार्यशाला आयोजित किया जाना सुनिश्चित किया गया इस कार्यशाला में भाग लेनें के लिए ग्रामीण क्षेत्रों, ग्रामीण शहरों, तहसील व जनपद स्तर के विद्यालयों के प्रधानाध्यापक व धर्म गुरूओं एवं डाक्टरों को भी आमंत्रित किया गया। कार्यशाला के दिनांक समय व स्थान के प्रचार–प्रसार के लिये मेला बाजार आदि में पम्पलेट वितरण कराया गया तथा पोस्टर आदि चिपकाये गये। तिराहे चौराहें पर माइक द्वारा कार्यशाला व प्रचार–प्रसार किया गया। जिससे कि भारी संख्या में लोग कार्यशाला में भाग ले सके।

कन्या भ्रूण हत्या

कन्या भ्रूण हत्या कार्यक्रम :

सुझाव एवं निष्कर्षः

30 अप्रैल सम्पन्न हुए कार्यक्रम कन्या भ्रूण हत्या का समाज पर बड़ा सुन्दर परिणाम निकला लोंगों ने अपना सुझाव भी दिया और निराकरण भी सुझाया कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष अद्योलिखित है।

(1) महत्वपूर्ण प्रभाव :

उक्त कार्यक्रम का समाज पर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा। कन्याओं की भ्रूण हत्या पर सोचने पर लोग विवश हो गये उन्हें अपराध बोध हुआ कि मैं अपराध कर रहा हूं और भविष्य में ऐसा अपराध न करने का संकल्प लिया। तमाम महिलाओं ने इस क्षेत्र में आगे बढ़कर भागीदार होने का तथा भविष्य में ऐसा दुष्पाप कभी न करने का वचन दिया।

(2) भ्रूण हत्या के कारणों पर विचार–विमर्शः

कार्यक्रम में उपस्थिति जनसमुदाय में कतिपय व्यक्तियों ने भ्रूण हत्या के कारणों पर अपना विचार व्यक्त करते हुए उसे रोकने का प्रयास करने हेतु समाज का आह्वान किया कि कन्याओं को मां के गर्भ में समाप्त कर देने तथा दहेज लेने वालों को दण्ड मिलना चाहिए तथा उनका सामाजिक वहिष्कार भी होना चाहिए जिससे समाज एक नवजागरण हो सके। ऐसा लोगों का मानना है कि कन्या भ्रूण हत्या इसलिए करा दी जाती थी कि विवाह में दहेज देना पड़ेगा दहेज के कारण ये जघन्य अपराध आये दिन हुआ करते हैं। जब तक दहेज प्रथा समाप्त नही होती तब तक कन्या भ्रूण हत्या रोकने में सफलता नहीं मिल सकती है इसलिए समाज को चाहिए कि दहेज प्रथा को रोकने के लिए व्यापक स्तर पर मुहिम चलाएं और सरकार को भी चहिए कि इस पर कठोर कदम उठाए और जो ऐसा जघन्य अपराध करते हैं उसे कठोर दण्डित दिया जाय। आज हमारे देश में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की आबादी पर यदि नजर दौडाई जाय तो 1000 पुरूषों पर लगभग 900 महिलाएं हैं और यदि यही स्थिति रही तो भविष्य में इसका अनुपात अत्यधिक विगड़ जायेगा और इससे समाज में तमाम प्रकार की

नई समस्याएं उत्पन्न हो जायेगी। इसलिए कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए हम सभी लोग एक संकल्प लें कि भविष्य में हम कभी ऐसा अपराध नही करेंगे।

(3) घोर अपराध की प्रवृत्तिः

कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक अपराध है इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगो नें महसूस किया कि भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है।

(4) दुष्प्रभावः

साधारण तौर पर अभी पता लगाना मुश्किल है कि भ्रूण हत्या का कितना बड़ा दुष्प्रभाव समाज पर पड़ रहा है । सरकारी आकड़े बताते है कि 1000 पुरूषों पर लगभग 900 महिलाएं ही है। जिसका असर दीर्घकाल में ऐसा पड़ेगा कि समाज स्वच्छन्द हो जाएगा। बहू–बेटियों की इज्जत सरे आम नीलाम होगी पुरूष अपनी यौन पिपासा मिटाने के लिए किसी भी स्तर पर गिर जायेगा जो हमारी मान–मर्यादा, नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के सर्वथा प्रतिकूल होगा।

(5) आवश्यक सुझाव :

उपस्थित जन समुदाय ने भ्रूण हत्या को रोकने के लिए अपने–अपने सुझाव भी प्रस्तुत किये। भ्रूण हत्या रोकने के प्रयास के तौर ऐसा करने वालों को जेल के सीखचों में डलवाने का प्रयास होना चाहिए। और जब तक सब लोग सचेत नहीं होगे और इसके विरूद्ध समाज के हरवर्ग को मिलकर प्रयास करना चाहिए तभी कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में सफलता मिल सकती है। महिलाओं को सुझाव दिया गया कि वे एक मॉ के तौर पर कन्या भ्रूण हत्या का तीव्र विरोध करें क्योंकि उनकी सहमति व सहभागिता के बिना कन्या भ्रूण हत्या हो ही नहीं सकती। वे भी तो कल को किसी की कन्या थी और आज मॉ बन रही है। अगर भविष्य की मॉ को आज की मॉ जन्म नहीं देगी तो हमारे समाज का क्या स्वरूप

होगा इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। राष्ट्रीय महिला आयोग के आर्थिक सहयोग एवं संस्थान के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या सेमिनार में सम्मिलित हुए सभी समुदाय के लोग महिला एवं पुरूष को विशेषज्ञ एवं डाक्टरों को तथा साधु–सन्तों के माध्यम से लोगों को यह जानकारी दी गयी कि लड़का–लड़की एक समान हैं। लड़की भी लड़के के समान ही होती है। यह भी आपकी सन्तान है। इनको यदि हम एक नजर से नहीं देखेगे तो समाज को इसका भयंकर दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगा। इस सेमिनार में एकत्र हुई महिलाओं में कुछ महिलाओं ने मंच से अपना विचार प्रकट करते हुए यह संकल्प लिया कि हम सभी महिलाओं को चाहिए कि कन्या भ्रूण हत्या को रोके और अन्य लागों को भी समझायें कि भ्रूण हत्या एक अपराध है। अन्तर में सभी महिलाओं एवं पुरूषों ने संकल्प लिया कि कन्या भ्रूण हत्या को हम सब मिलकर रोकेंगे और इस योजना को सफल बनायेगें।

(6) निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज में नवजागृति एवं नवचेतना का संचार हुआ और ऐसा कार्यक्रम करने के लिए आयोजक मण्डल को लोगों ने कोटि–कोटि धन्यवाद दिया और आग्रह किया कि भविष्य में इस तरह के और भी कार्यक्रम आयोजित किये जाय जिससे यह कुरीति जो समाज में जड़ जमाये बैठी है समाप्त हो सके।

रेखा सेवा संस्थान

अमेठी सुलतानपुर

एक दिवसीय कार्यशाला

जनपद सुलतानपुर के विकास खण्ड भेटुआ में स्थिति यशोदा देवी इण्टर कालेज के प्रांगण में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 30 अप्रैल 2008 को सुबह 9 बजे से किया गया।

वर्कशाप के प्रारम्भ में लाभार्थियों का पंजीकरण किया गया। तथा उन्हे पेन, पैड, पम्पलेट तथा शिक्षाप्रद पोस्टर आदि दिये गये। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री डा0 सलिल श्रीवास्तव जनपद सुलतानपुर ने किया। उद्घाटन के पश्चात महिलाओं द्वारा प्रेरक गीत व नाटक आदि प्रस्तुत किये गये। उसके पश्चात वक्ताओं ने कन्या भ्रूण हत्या के प्रति लोगों को संचेत किया और इसके कारण समाज में होने वाले विनाशकारी घटनाओं के प्रति सचेत किया। मु0 उमर ने मुस्लिम महिलाओं को समाजिक कुरीतियों के प्रति सचेत करते हुए महिला शिक्षा तथा बाल विवाह को रोकने के लिए महिलाओं को आगे आने के लिए आहवाहन किया। पंडित राम उजागिर तिवारी ने धर्म शास्त्र का हवाला देते हुए कन्या भ्रूण हत्या को जघन्य अपराध बताया तथा लोगों का आहवाहन किया कि इस तरह का अपराध करने वाले लोगों का समाजिक बहिष्कार किया जाय। उन्होने बताया कि हिन्दू धर्म में पूर्व में यह ब्यवस्था थी कि यदि कोई भी ब्यक्ति भ्रूण हत्या करवाता अथवा भ्रूण हत्या करता था तो ऐसे ब्यक्ति का तुरन्त बहिष्कार हो जाता था तथा यह कृत कराने वाले दमपत्ति के यहां लोग पानी भी पीना कबूल नही करते थे तथा यह कृत कराने वाला ब्यक्ति भी समाजिक दण्ड का पात्र होता था। जिसके कारण इस प्रकार के अपराधों पर समाजिक नियन्त्रण था। और बहुत कम चोरी छिप्पे यह कार्य होता था। पण्डित राम उजागिर तिवारी ने समाज के लोगों को जागरूक होने तथा इस प्रकार के अपराध रोकने के लिए आगे आने का अनुरोध किया।

लन्च

दोपहर 1 बजे लन्च किया गया सभी लाभार्थियों एंव आगन्तुओं ने लन्च के पश्चात लगभग 2 बजे कार्यशाला में अपना योगदान किया।

द्वितीय सत्र–

लन्च के पश्चात द्वितीय सत्र का प्रारम्भ महिलाओं के एक प्रेरक गीत के द्वारा किया गया इसके पश्चात एक छोटी सी नाटिका महिलाओं के द्वारा प्रस्तुत की गयी।

2.....

तत्पश्चात जर्नादन सिंह ने गिरते हुए लिंग अनुपात पर अपने प्रेरक सुझाव दिये। तथा अपने वकतब्य के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या से समाज में उत्पन्न होने वालें विभिन्न विकारों के प्रति लोगों को सजग किया तथा समाज को जागरूक होने का आहवाहन किया। राजेश्वरी सिंह एंव मनोरमा सिंह तथा अशोक शंकर गुप्ता एडवोकेट एंव इन्जीनीयर एंव समाज सेवक श्री सुरेन्द्र चन्द्र पाण्डेय आदि ने भी अपने संबोधन से कन्या भ्रूण हत्या के प्रति जागरूक होने का आहवाहन किया।

डा0 अरूण कुमार त्रिपाठी पूर्व जेयष्ठ ब्लाक प्रमुख संग्रामपुर ने अपने सम्बोधन में महिला भ्रूण हत्या को रोकने के लिए महिला सशक्तीकरण पर बल दिया तथा दहेज प्रथा को कन्या भ्रूण हत्या के लिए जिम्मेदार माना। उन्होने सुझाव दिया कि दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए दान दहेज के स्थान पर बालिकाओं को पिता की सम्पित्ति में पुत्र के समान बराबर अधिकार दिये जाएं।

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का समापन करते हुए विशेष कर महिलाओं का आहवाहन किया कि वे माँ हैं तथा माँ के साथ–साथ एक महिला हैं। इसलिये उनकी जिम्मेदारी बनती है कि बालिका भ्रूण हत्या रोकने के लिए आगे आवें और जब वे सजग और जागरूक होकर निर्भयता के साथ महिला जाति के विनाश को रोकने के लिए द्वढ़ हो जायेगीं तो निश्चित ही यह कुरीत समाप्त हो जायेगी। उनहोने इसके लिए दहेज प्रथा को जिम्मेदार ठहराते हुए महिलाओं से अपेक्षा की और आग्रह किया कि वे सक्षम व सबल बने समाज और इसके लिए उन्हे स्वय हर स्तर पर आत्मनिर्भर होने का प्रयास करना पड़ेगा। जिसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रमुख्य है। श्री डा0 संगीता श्रीवास्तव ने बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए दहेज को रोकवाने के लिए समाज को आगे आने का आहवाहन किया।

इसके पश्चात संस्था अध्यक्ष संजय पाठक ने आये हुये समस्त अतिथियों एंव लाभार्थियों का आभार प्रकट किया। तथा आपेक्षित सहयोग के लिए धन्यवाद किया। तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री जनार्दन सिंह ने सबका आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

अनुवर्ती कार्यवाही

कार्यशाला के एक माह पश्चात संस्था प्रतिनिधियों द्वारा सभी क्षेत्रों का भ्रमण किया गया जहां से कार्यशाला में भाग लेने के लिए लोग आये थे। गांव तहसील व ब्लाक स्तर पर गोष्ठियों का आयोजन करके कार्यक्रम के उद्देश्यों की सफलता के प्रति लोगों से विचार विमर्श किया गया। तथा हर ब्लाक व तहसील स्तर पर 2–3 जागरूक लोगों का समूह बनाकर उन्हे इस बात को लेकर प्रेरित किया गया। कि वे कन्या भ्रूण हत्या के प्रति लोगों को जागरूक करते रहें तथा इस अपराध में सम्मलित लोगों पर नजर रखें जिससे क्षेत्र में कन्या भ्रूण हत्या को रोका जा सके।

(संजय पाठक)
अध्यक्ष
रेखा सेवा संस्थान
अमेठी – सुलतानपुर
उत्तर प्रदेश